पेड़
सफ़दर हाशमी

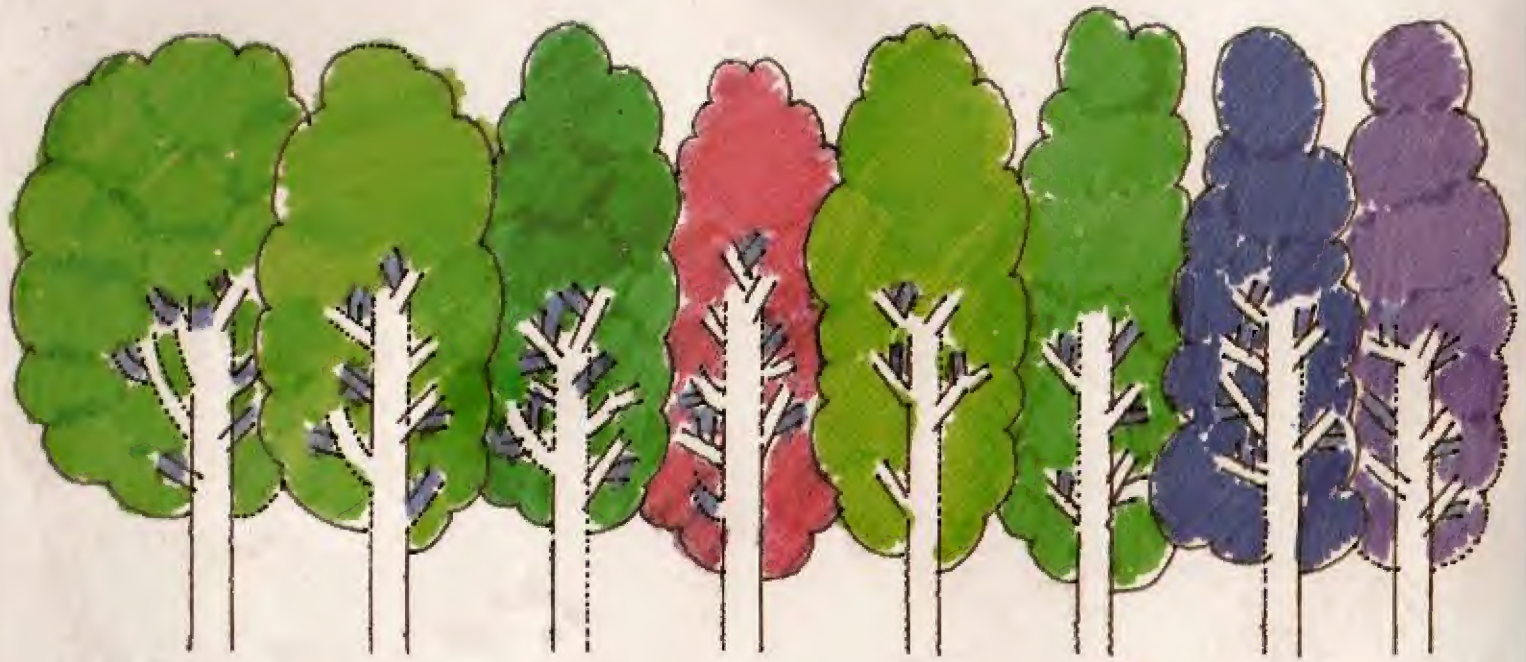

पेड़

मलयश्री हाशमी द्वारा सहमत की ओर से प्रकाशित ८ विट्ठल भाई पटेल हाऊस, रफी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१
मुद्रक अजंता ऑफसेट एंड पैकेजिंग्स लिमिटेड ९५-बी, वजीरपुर इंडस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली-११००५२

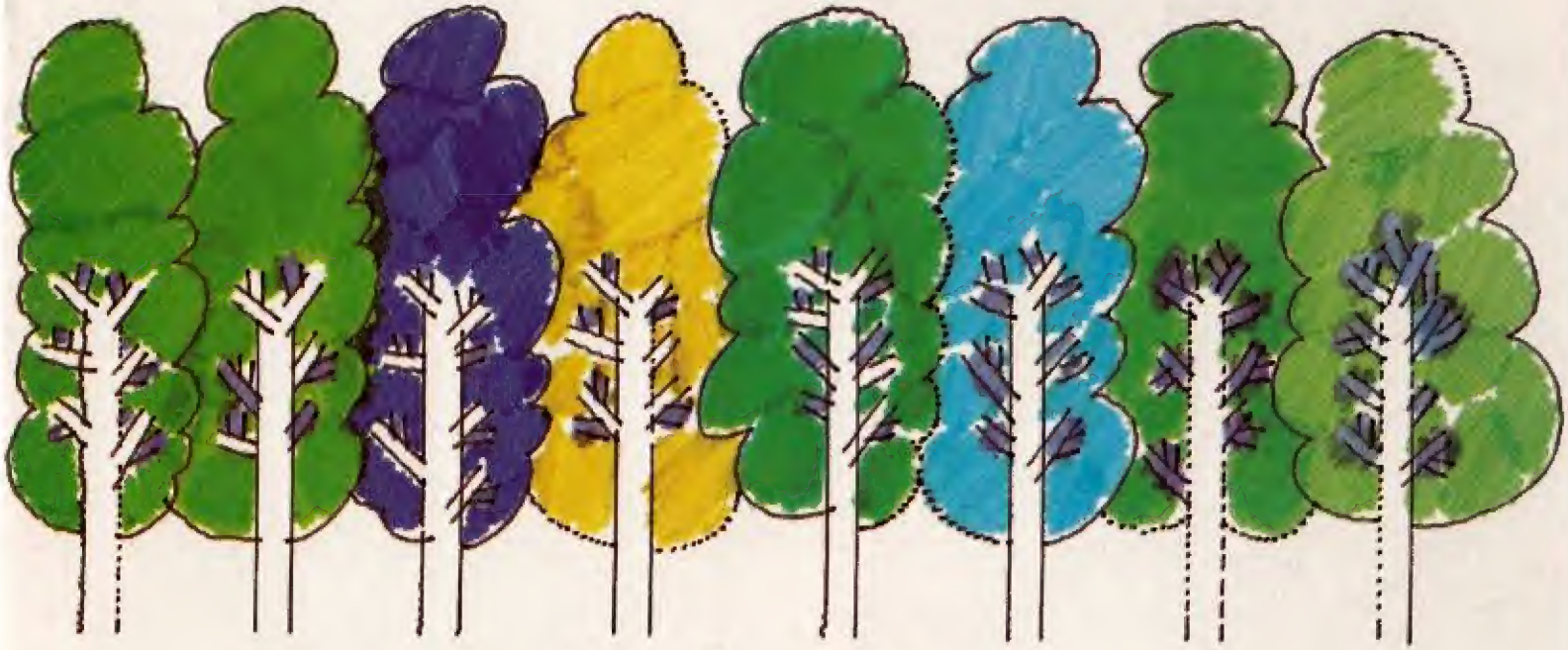

सफ़दर हाशमी की कविता

तस्वीरें मिकी पटेल

लिखावट अशोक चक्रधर

आओ इस जंगल में आओ
मत घबराओ
मैं, इस जंगल का एक पेड़
तुम्हें बुलाता हूं
अपनी कथा सुनाता हूं
आओ अपने साथियों से
मिलवाता हूं

आओ, छूकर देखो मेरा तना
सीधा और मज़बूत
और ऊपर
मेरी पतली बल खाती
शाखों को देखो
देखो अनगिनत टहनियों को

क्या? पूछते हो पत्ते किधर गए?
मेरे दोस्त,
वो तो पिछले पतझड़ में गिर गए
लेकिन जल्द ही फिर निकल आएंगे
मेरी डालियों पर लद जाएंगे।

मेरी जड़ें
नहीं दिखतीं तुम्हें
लेकिन वे हैं
ज़मीन के नीचे
गहराई तक फैली हुई
वही सोखती हैं
ज़मीन से पानी
मेरी प्यास बुझाने को
मुझे पत्तों से सजाने को।

लो फूट आए मेरे पत्ते
हरे-भरे मेरे कपड़े-लत्ते
लेकिन ये मेरी पोशाक ही नहीं
मेरे पोषक भी हैं
हवा से खींचते हैं साँस
और सूरज से गर्मी
और बनाते हैं मेरी ख़ुराक ।

ये कीड़े-मकोड़े
रेंगते, उड़ते, फुदकते हुए
ये सब मेरे दोस्त हैं
मैंने इन्हें
दरारों, छेदों, सूराख़ों में
बसाया है
इनके अंडों को
जाड़े-गर्मी से बचाया है।

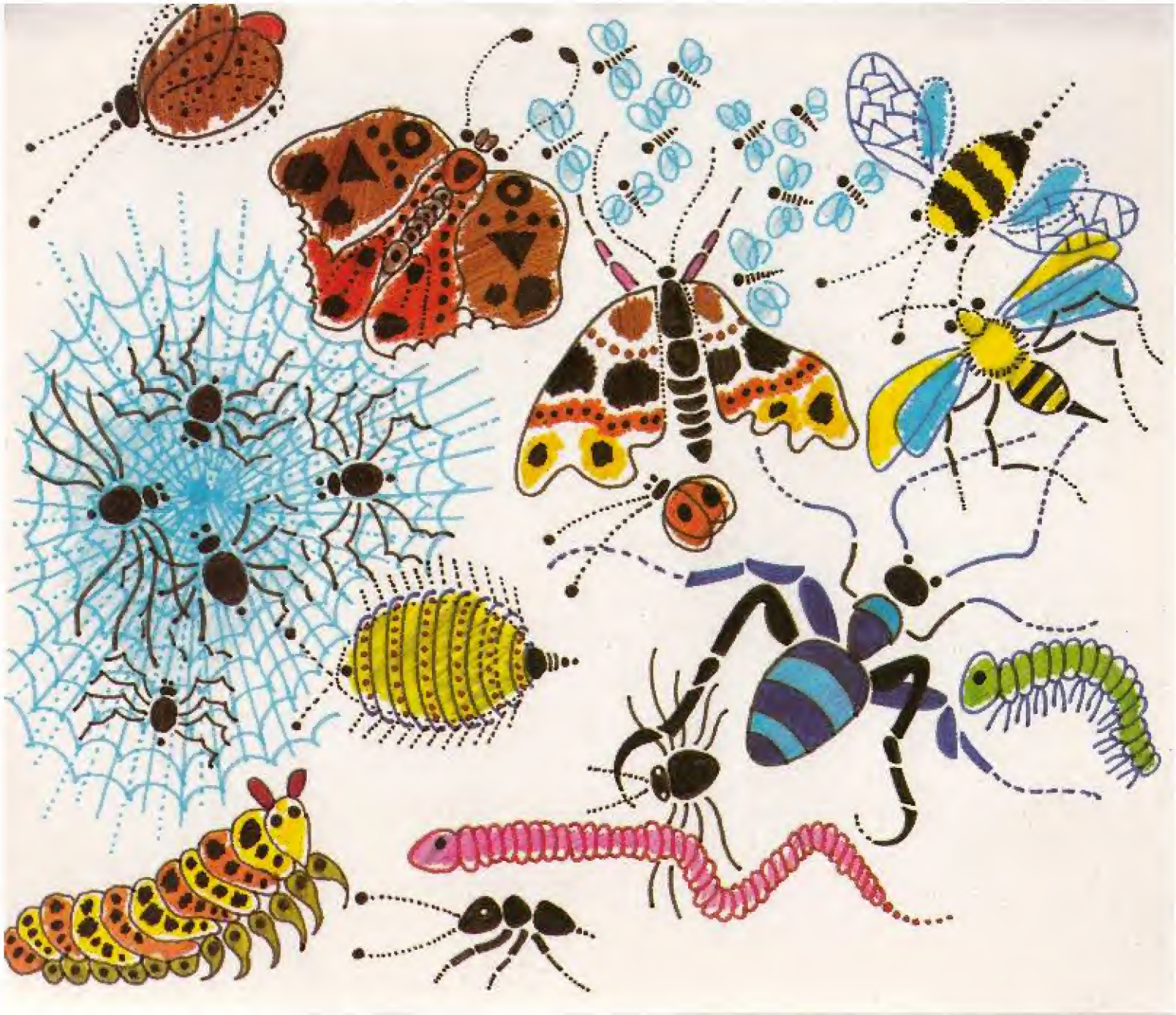

इनके बच्चों को
अपने सीने पर सुलाया है
इसी से खुश होकर
ये गाते हैं गीत
मधुर संगीत
झुन-झुन, झिन-झिन
और नाचते हैं
सारे-सारे दिन।

रंग-बिरंगे पंछी
मेरे पास आते हैं
मेरे दोस्त बन जाते हैं
मेरी टहनियों के बीच
अपने घोंसले बनाते हैं
चहकते हैं, गाते हैं
उड़ते हैं, मंडराते हैं
अपने नन्हे-मुन्ने बच्चों को
उड़ना सिखाते हैं।

मुझे बच्चे बहुत प्यारे हैं
बच्चों को मैं प्यारा हूँ
आते हैं मेरे साए में
ऊधम मचाने
लटकने मेरी डालियों से
झूले बनाने
मेरे खट्टे-मीठे फलों को
चोरी-छुप्पे खाने

मुझे ध्यान से देखो
इस जंगल के सभी पेड़ों को
प्यार से देखो
हमारा और तुम्हारा
कितना गहरा नाता है
ये जंगल सब प्राणियों के
कितने काम आता है
मेरी लकड़ी से बनी हैं
तुम्हारी मेज़ें कुर्सियां
तुम्हारे सोने की चारपाई

तुम्हारे दरवाज़े खिड़कियाँ
और तुम्हारी पेंसिल ।
टीचर से पूछो
वो बतलाएंगी
कि मैं बारिश भी करवाता हूँ
मिट्टी को बहने से बचाता हूं
बाढ़ भी रुकवाता हूं
और सूखा भी भगाता हूं
ये पूरा जंगल तुम्हारे काम आता है
तुम्हें कितना सुख पहुंचाता है।

लेकिन मुनाफ़ाख़ोर व्यापारी
इसे अंधाधुंध कटवाता है
नए पेड़ नहीं लगवाता है
रोको, रोको
उस लोभी को रोको
ऐसा करने से उसे टोको
नहीं तो एक दिन
ये जंगल ख़त्म हो जाएगा
सिर्फ़ ठूंठों का
एक श्मशान रह जाएगा।

Rs. 10/-